SURVIVORS Against TB

मीडिया फेलोशिप

पृष्ठभूमि

सर्वाइवर्स अगेंस्ट टीबी (SATB) एक समाज केंद्रित अभियान है, जिसका नेतृत्व टीबी की बिमारी को मात दे चुके लोगों के समूह द्वारा किया जाता है। यह लोग भारत में टीबी से लड़ाई को मज़बूत बनाने के लिए काम कर रहे हैं। यह लोग टीबी के सबसे गंभीर प्रकार से जूझने का अनुभव रखते हैं और उन सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों को भी समझते हैं, जिसके तहत लोग टीबी मरीज़ों से व्यवहार करते हैं। अपने इन्हीं अनुभवों के आधार पर यह टीबी विजेता प्रमुख हितधारकों (सरकारी प्रतिनिधियों) के समक्ष मरीज़ों के विचार रखते हैं और भारत में टीबी का इलाज आसानी से उपलब्ध कराने तथा इसे मरीज़ केंद्रित बनाने के लिए आवश्यक बदलावों की सिफारिश करते हैं। SATB का मानना है कि अगर भारत टीबी पर व्यापक रूप से नियंत्रण करना चाहता है, तो देश को टीबी के मरीज़ रह चुके लोगों के सुझाव सुनने चाहिए और उन नीतियों की निर्माण प्रक्रिया में उन्हें भी शामिल करना चाहिए, जो टीबी मरीज़ों को सबसे अधिक प्रभावित करती हों।

शीर्षकः

टीबी से जुड़े कलंकः कारण, समाधान और जीवित बचने की कहानियां

टीबी से ठीक हो चुके मरीज़ों के साथ काम करने के हमारे अनुभव में यह देखा गया है कि समाज में टीबी से जुड़े कलंक की जड़ें काफी गहरी हैं। हालांकि टीबी उपचार प्रणाली के भागीदार मरीज़ केंद्रित इलाज की मांग करते हैं, जिसमें मरीज़ को सर्वाधिक महत्व दिया जाए, लेकिन अक्सर यह मरीज़ इस बिमारी से जुड़े समाजिक कलंक के कारण इलाज कराने में संकोच करते हैं और पूरी तरह ठीक नहीं हो पाते।

टीबी से जुड़े यही कलंक अक्सर अच्छे स्वास्थ्य के प्रयासों में बड़ी रुकावट बनते हैं और इन्हीं के कारण मरीज़ों को काफी अधिक पीड़ा झेलनी पड़ती है। सामाजिक महत्व खो देना, वैवाहिक जीवन की समस्याएं और दिल को ठेस पहुंचाने वाले समाज के बर्ताव कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जिनकी वजह से टीबी पीड़ित व्यक्ति अपना इलाज नहीं करा पाते। यही कलंक समय पर इलाज का पालन करने और मरीज़ के प्रति उसके परिवार के व्यवहार को भी प्रभावित करता है। इसके परिणाम स्वरूप मरीज़ के मानसिक स्वास्थ्य और बिमारी से उबरने की प्रक्रिया पर नकारात्मक असर होता है।

यह कलंक दरअसल समाज एवं संस्थाओं के बीच पर्याप्त जानकारी के अभाव और ऐसी अवांछित बिमारियों के बारे में गलत धारणाओं के कारण पैदा होते हैं। टीबी के एक से दूसरे व्यक्ति में फैलने के जोखिम की मान्यता ही इसके कलंक की सबसे आम वजह है। टीबी को इसलिए भी कलंकित किया जाता है क्योंकि आमतौर पर इसे एचआईवी, गरीबी, सामाजिक स्तर या कुपोषण से जोड़कर देखा जाता है।

फेलोशिप के बारे में

ऐसा क्यों है कि दुनिया भर में सबसे अधिक टीबी के मामले भारत में मौजूद हैं? यहां टीबी के कारण हर मिनट एक भारतीय की मौत क्यों होती है? हम क्यों टीबी मरीज़ों के साथ भेदभाव करते हैं? अगर उन्हें हवा से फैलने वाली एक बिमारी हुई है, तो इसमें उनकी गलती कैसे हुई? हम इस बिमारी के कलंक को कैसे मिटाएं ताकि टीबी मरीज़ों की मुश्किलें कम की जा सकें?

फेलोशिप के लिए चुने गये उम्मीदवारों से यह अपेक्षा की जाएगी कि भारत में मौजूद इन मुद्दों के बारे में जानें तथा एक व्यापक तथा आलोचनात्मक तरीके से इन्हें समझें। साथ ही समाज एवं स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के अंतर्गत मौजूद कलंक से जुड़ी ऐसी कहानियां सामने लाएं, जिनका असर टीबी प्रभावित लोगों तथा उनके परिवारों पर हुआ है।

हमें विस्तारपूर्वक अच्छी तरह बताई जाने वाली कहानियां चाहिए, जो इस विषय को संपूर्ण विवरण के साथ सामने रख सकें। हमें विशेष रूप से स्थानीय मुद्दों पर प्रकाश डालने वाली कहानियों में दिलचस्पी है। हमें ऐसी कहानियां भी चाहिए जो कलंक से जुड़ी चुनौती का समाधान बताएं, और टीबी से ठीक होने और इस बिमारी को हराने की सफलता दिखाएं।

यह फेलोशिप हिंदी, गुजराती और मराठी मीडिया, प्रत्येक से एक प्रिंट या ऑनलाइन पत्रकार / स्वतंत्र पत्रकार / स्वतंत्र लेखकों यानि कुल तीन उम्मीदवारों के लिए खुली है। प्रत्येक उम्मीदवार से **3 (न्यूनतम) से 4 (अधिकतम) लेख** प्रस्तुत करने की उम्मीद की जाएगी।

अवधि एवं धनराशि

यह फेलोशिप **छह सप्ताह** की अवधि के लिए होगी और चुने गए प्रत्येक फेलो को **रु. 50,000** की धनराशि दी जाएगी। यह स्टाइपेंड शोध कार्यों, यात्रा, लेखन, प्रोडक्शन तथा अन्य खर्चों के लिए दिया जाएगा। फेलोशिप की राशि दो किश्तों में भुगतान की जाएगी। चुने गए **प्रत्येक फेलो से तीन कहानियां लिखने एवं प्रकाशित** करने की उम्मीद की जाएगी।

आवेदन के नियम

फेलोशिप के लिए आवेदन करने हेतु कृपया निम्न दस्तावेज जमा करें:

- एक कवर लेटर, सीवी (तीन ए4 पन्नों से अधिक बिल्कुल नहीं)
- पूर्व प्रकाशित कार्यों के दो नमूने। अगर प्रकाशित लेख क्षेत्रीय भाषा में है, तो कृपया अंग्रेज़ी अनुवाद भेजें।
- अपने वर्तमान नियोक्ता/संपादक की ओर से 'समर्थन पत्र', जिसमें यह आश्वासन दिया गया हो कि फेलो को छह सप्ताह का समय/अवकाश दिया जाएगा और इनके द्वारा लिखे गए लेख अपने प्रकाशन में छापने की सहमति भी दी गई हो।
  स्वतंत्र पत्रकारों के लिए भी एक प्रकाशन के संपादक द्वारा समर्थन पत्र पेश करना ज़रूरी है जिसमें उनके लेखों को प्रकाशन करने की सहमति दी गई हो।
- कृपया निम्न प्रश्नों के जवाब दें

    - आप SATB फेलोशिप क्यों करना चाहते हैं और अपने करियर में इससे क्या लाभ होता देखते हैं?
    - अपनी फेलोशिप अवधि के दौरान, हम यह चाहेंगे कि आप दिये गये शीर्षक पर ध्यान केंद्रित करें। आप किस विषय पर शोध एवं जांच करना चाहेंगे और क्यों?
- सभी आवेदन ईमेल survivorsagainsttb@gmail.com के जरिये **20 जनवरी 2018** तक जमा किये जा सकते हैं। कोई भी सवाल या स्पष्टीकरण के लिए **कृतिका कामथन,** मैनेजर, एडवोकेसी एवं कम्युनिकेशन, SATB से संपर्क करें, कॉल करें **+91 8130666037**

नोट

- चुने गये सदस्यों को दिल्ली में एक ओरिएंटेशन प्रोग्राम में हिस्सा लेना होगा।
- प्रकाशित किये जाने लेखों का कॉपीराइट प्रकाशनों के पास रहेगा, हालांकि SATB अपने पास सभी लेखों को साझा करने एवं प्रासंगिक वेबसाइट्स तथा ब्लॉग्स पर इन्हें प्रकाशित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।
- आवेदन करने वाले उम्मीदवार एक न्यूनतम मानक के अनुकूल नहीं पाए जाते हैं, तो SATB के पास कोई भी फेलोशिप प्रदान ना करने का अधिकार सुरक्षित होगा।
- SATB द्वारा लिये गए सभी निर्णय अंतिम होंगे।
- सभी आवेदनों का मूल्यांकन SATB के साथ ही एक बाहरी जूरी पैनल द्वारा भी किया जाएगा।

- चुने गए उम्मीदवारों की घोषणा **जनवरी 27, 2018** की जाएगी। यह फेलोशिप **10 मार्च 2018** को समाप्त होगी।